MIT GROUP OF INSTITUTIONS (MITGI)

Value education cell
MIT Moradabad
A Report on FDP (Refresher Level1) on Universal Human Values & Professional Ethics during 10-17th July-2018

Day wise report of the FDP

Day1: The Faculty development program on universal human values and professional ethics is started with the inaugural function.
After that the introduction of the participant was taken place followed by self-evaluation of the participant.
Day2: In first session the resource person Mr. Moti Chand Yadav discussed about the role of education- sanskar in the holistic development. The role of education-sanskar is to facilitate the development of the competence to live with Definite Human Conduct by ensuring all 3 (Right Understanding, Relationship and Physical Facility) – in every Human Being. He draws the attention that due to lack of right understanding there are two types of persons in the society. One SVDD (Sadhan Viheen Dukhi Daridra) and other are SSDD (Sadhan(Suvidha) sampan Dukhin Daridra) but everyone wants to be SSSS (Sadhan Sampan Sukhi Samridh).

Then he told that Human being is not mere a body but it is coexistence of self and body. And he explained these two units with the help of need and activities of the two.

In this session he also explained the happiness and prosperity.

Happiness:

The state or situation, in which I live,
If there is harmony / synergy in it,
Then it is Naturally Acceptable to me to be in that state / situation
To be in a state / situation which is Naturally Acceptable is Happiness

Prosperity:

The feeling of having more than required Physical Facility

Day3: Third started with the question answer session and then he discussed about the harmony in self. And told that behaviour with and work on rest of nature depends on the imagination of the human being. He explained imagination as the combination of desire, thought and expectation.

Then he discussed about the harmony with body.

Day4 & 5: The resource person discussed about the harmony in family. Here he told that there are 9 feelings in relationship. And these are Trust, respect, affection, care, guidance, reverence, glory, gratitude and love.

He explained the

Trust as the feeling to have clarity that other wants to make me happy and prosperous.

Respect: the feeling that the other is like me.

Affection is the feeling of being related to other.

Care: Feeling of responsibility toward the body of my relative

Guidance: Feeling of responsibility toward the self(I) of my relative.

Reverence: The feeling of acceptance for Excellence.

Glory: Feeling for those who have made effort for excellence.

Gratitude: Feeling for those who have made effort for my excellence.

Love: feeling of being related to all.

Day6: on day six he discussed about the harmony in society. Here he discussed about the human goal. There are four goals of the society.

1. Right Understanding in every individual
2. Prosperity in every family
3. Fearlessness in society
4. Coexistence in nature/ existence.

Day7: on day 7 he discussed about the nature. Where he put a proposal that there are four orders in nature

1. Material order – soil, water
2. Pranic order – Plants and trees
3. Animal order- animals and birds.
4. Human order- human being

He draws attention that all the orders are fulfilling their relationship except human order. There is a need to understand the relationship with all other three order and to fulfill these relationships.

Then he discussed about the existence. He put a proposal that the existence is coexistence. he explained the coexistence as the units submerged in space.

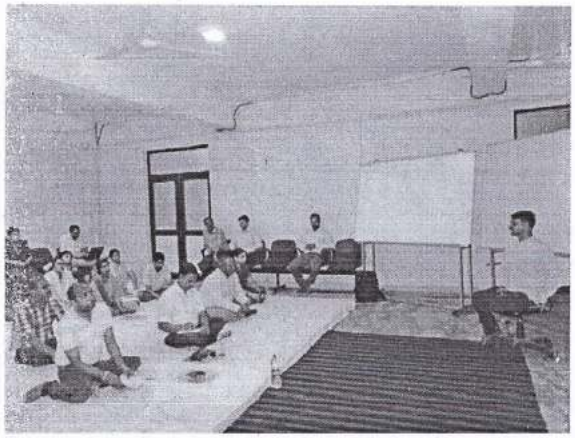

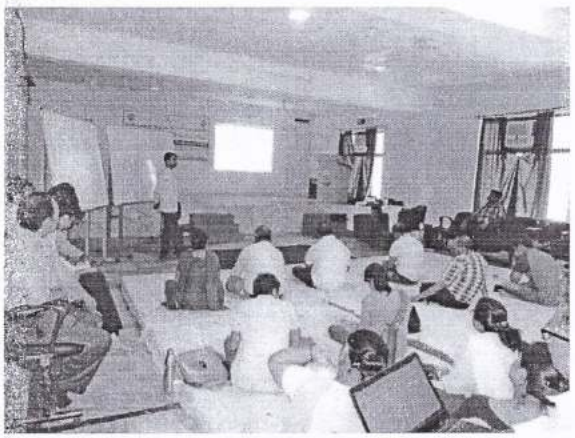

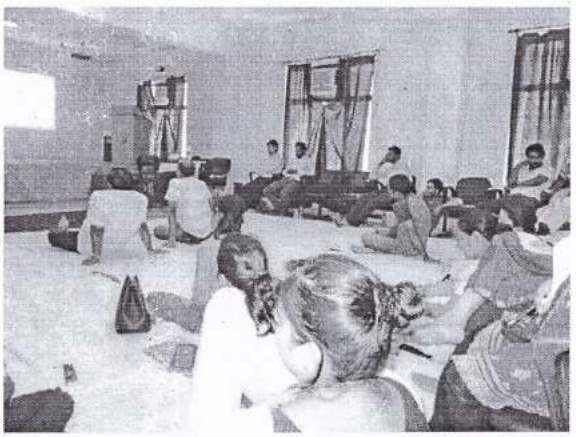

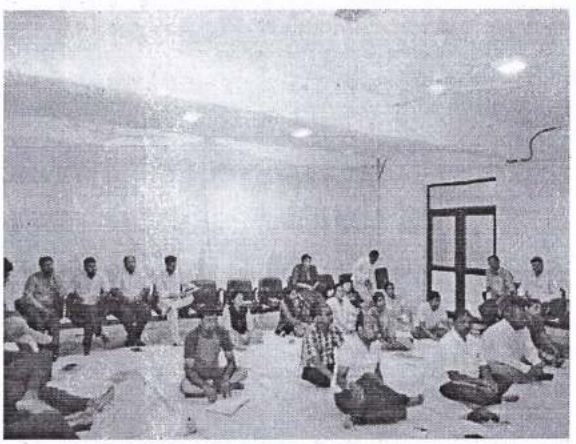

(DEAN
VE CELL, MIT)

A Brief Report on FDP sponsored by AICTE on "Universal Human Values" For Student Induction

एम 0 आई 0 टी 0 मुरादाबाद में 'युनिवर्सल ह्युमन वैल्यू एवम प्रोफेशनल एथिक्स' विषय पर आठ दिवसीय एफ. डी. पी. का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम १५ जनवरी से २२ जनवरी २०१९ तक TEQIP-III, डा० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय लखनऊ के मूल्य आधारित शिक्षा प्रकोष्ठ' के तत्वावधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में ए. के. टी. यू. लखनऊ से सम्बद्ध विभिन्न कालेजों से 30 प्रतिभागी शिक्षकों ने प्रतिभाग किया।

कार्यशाला की शुरूआत, समग्र विकास में शिक्षा की भूमिका से हुयी। **मनोज कुमार गुप्ता जी** ने प्रस्ताव के रूप में बताया कि शिक्षा भूमिका मानव में मानवीय आचरण से जीने की योग्यता विकसित करना है। समग्र विकास के बारे में चर्चा करते समय उन्होंने इस बात पर ध्यान दिलाया कि हममें से अधिकांस लोगो का जीना सुविधा केन्द्रित है। जबकि सुख केवल सुविधा में नहीं बल्कि सुविधा के साथ संबंधों की भी आवश्यकता हैं। इस तरह यदि मानव सही समझ के साथ संबंधों में जीता हुआ यदि उभयत्रप्ति और सही समझ के साथ अपनी आवश्यकाताओं का ठीक–ठीक निर्धारण करके, उससे अधिक की उपलब्धि करता है तो उभय समृद्धि को प्राप्त करता है। इस तरह मानव की उभ–सुख और उभय–समृद्धि से जीने की ही योग्यता को ही समग्र विकास की संज्ञा है। इसके बाद सही–समझ के बारे मे बताया कि मानव के जीने के चार स्तर है। मानव व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति के साथ जीता है। हर स्तर की अपनी व्यवस्था है। मानव का चारो स्तरों की व्यवस्था को समझने और उस व्यवस्था में जीने की योग्यता को सही समझ कहा। इसके बाद **मनोज कुमार गुप्ता जी** ने चारों स्तरों की व्यवस्था को चर्चा की। उन्होने मानव में व्यवस्था का प्रस्ताव दिया कि मानव शरीर और मै (जीवन) के सहअस्तित्व के रूप में है। फिर उन्होने शरीर और जीवन को इनकी आवश्यकताओं और कियाओं के माध्यम से बताया कि यह दोनों अलग–अलग इकाई है। एक की आवश्कयकता पूरी नही होती। अतः मानव को दोनो की आवश्यकताओं को समझना और पूरा करना होता है।

इसके बाद उन्होने जीवन की कियाओं को करे में विस्तार ससे बताया है। उन्होने बताया कि जीवन में कियाओं के रूप में इच्छा, विचार और आशा होती है। इच्छा को चित्रण, विचार को विश्लेषण और आशा को चयन/आस्वादन के रूप में देखा। चित्रण, विश्लेषण, कहा। और यह भी बताया कि मानव का व्यवहार उसकी कल्पनाशीलता के आधार पर होता है। मानव की कल्पनाशीलता का आधार मान्यता, संवेदना और **सहजस्वीकृति** है।

हर मानव की मान्यताएं अलग–अलग है इसलिए यदि कल्पनाशीलता का आधार मान्यता है। तो हर मानव अलग है। और कल्पनाशीलता का आधार सहज स्वीकृति है तो प्रत्येक मानव एक।

मानव के जीने को दूसरी व्यवस्था – परिवार है।

पविार की व्यवस्था का Building block संबंध है। संबंध का आधार जीवन (self) है न कि शरीर। प्रवोधक **मनोज कुमार गुप्ता जी** ने प्रस्ताव के रूप में कहा कि

–संबंध है– एक जीवन का दूसरे जीवन से।

–संबंध में भाव है – एक जीवन के दूसरे जीवन के लिय।

–इन भावों को पहचाना जा सकता है यह निश्चित है और उनकी संख्या 9 है।

– इन भावों के निर्वाह और मूल्यांकन से उभय–सुख प्राप्त होता है।यह भाव है।

1. विश्वास 2. सम्मान 3. स्नेह 4. ममता 5. वात्सल्य 6. श्रद्धा 7. गौरव 8. कृतज्ञता9. प्रेम।

–यदि एक मानव को दूसरे मानव से यह आश्वस्ति हो जाये कि दूसरा मेरे सुख–समृद्धि के अर्थ में है उस आश्वस्ति को विश्वास कहा ।

– और यदि एक मानव को ऐसा दिख जाये कि दूसरा मेरे जैसा है इसी को सम्मान कहा ।

यदि एक मानव का दूसरे के प्रति विश्वास एवं सम्मान का भाव सुनिश्चित होता है तो वह संबंध का आधार बनता है और दूसरे को संबंधी के रूप में देख पाना ही स्नेह है।

यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को संबंधो के रूप में स्वीकारता है।

तो उसके शरीर के पोषण की जिम्मेदारी भाव भी आना है। इसी भाव को ममता कहा। संबंधी के शरीर के पोषण के साथ–साथ उसके जीवन (self) के समझ बढाने के भाव को वात्सल्य कहा।

श्रेष्ठता की स्वीकृति के भाव को श्रद्धा कहा। जिस व्यक्ति ने श्रेष्ठता के लिए प्रयास किया उसके प्रति भाव को गौरव कहा और जिसने मेरी श्रेष्ठता के लिए प्रयासकिया उसके प्रति भाव को कृतज्ञता कहा।

चरों स्तर की व्यवस्था को समझना और चारों स्तर की व्यवस्था में जीना हो जाये उसे श्रेष्ठता कहा।

अस्तित्व की प्रत्येक इकाई के साथ संबंध को स्वीकारने के भाव को प्रेम कहा।

मानव के मूल्य (उपयोगिता) को देखने का प्रयास किया तो पता चला कि मानव के जीने के चौथे आयाम 'प्रकृति में व्यवस्था पर चर्चा हुयी।

पूरी प्रकृति को देखने जाये तो चार अवस्थाओं में दिखाई देती है।

1. पदार्थ अवस्था – मिटट्ी, पानी, धातुएं
2. प्राण अवस्था – पेड़ पौधे
3. जीव अवस्था – पशु पक्षीकृ
4. ज्ञान अवस्था – मानव

इन चारों आवस्थाओं में पहली तीन अवस्थाऐं सहअस्तित्व विधि से जीती हुयी दिखाई देती है परन्तु मानव का जीना सहअस्तित्व विधि से नही हो पाया। मानव कैसे सहअस्तित्व विधि से जी जाये इसकी चर्चा हुयी।

(DEAN
VE CELL, MIT)